

ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' १७९ म अंक ०१ जून २०१५ (वर्ष ८ मास ९० अंक १७९) 

ऐ अंकमे अछि:-

नन्द विलास रायक दोसर लघुकथा संग्रह- मदन अमर

फागुलाल साहु जीक किछु विहनि कथा/ आलेख-मानव जीवनमे नारीस्वरूपक गरिमा

नन्द विलास राय- मदन अमर (लघु कथा संग्रह)

मदन-अमर

रमणजी इलाहावाद विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर छथि। हुनका एक बेटा आ एकटा बेटी छन्हि। बेटाक नाओं मदन आ बेटीक मीरा रखने छथि। मीरा आ मदन इलहेवादक एकटा कॉनवेंटमे पढ़ैए। मदन स्टैन्डर्ड पाँच आ मीरा स्टैन्डर्ड चारिमे पढ़ैए।

रमणजीक सासुर मिथिलांचलक कोयलख गाममे अछि। रमणजीक ससुर महराज रमणजी सँ गर्मी छुट्टीमे आम खाइले कोयलख आबए आग्रह केलखिन। रमणजी सपरिवार कोयलख एला।

नानी गाममे मीरा आ मदन दुइए-चारि दिनमे गामक धिया-पुता संग तेना ने मिलि गेल जेना पानिमे चीनी मिलैए। मदन नानी गामक धिया-पुता संगे कबड्डी आ हाथी-चुक्का खेल खेलाइत रहए। मदन तँ इलाहावादमे बैडमिन्टन आ क्रिकेट देखैत रहए। कखनो-काल क्रिकेट खेलबो करए। ओकरा लेल कबड्डी आ हाथी-चुक्का खेल नव छेलै, मुदा ओकरा नीक लगैत रहै।

नानी गाममे मदनकेँ अमर नामक एकटा बालकसँ दोस्ती भऽ गेल। एक दिन अमर मदनकेँ अपना अँगना लऽ गेल। अमरक घर फूसक रहए। ओकर बाबूजी दिल्लीमे दालि मीलमे काज करै छथिन। अमरक माए एकटा गाए पोसने छथिन। आइ-काल्हि गाए लगबो करै छन्हि। खेत-पथारक नाओंपर अमरकेँ बाधमे दस कट्ठा खेत, दू कट्ठा गाछी आ दू कट्ठा घराड़ी। अँगनामे दूटा घर। अमरक माए नीकहा-नीकहा आम मदनकेँ खइले देलखिन। मदन अमरकेँ माएसँ बड्ड प्रभावित भेल रहए।

मदनक नानाकेँ पक्काक घर। चारू भागसँ पोखरा-पाटन। ऊपरोमे चारि कोठरी। गामक लोक मदनक नानाक घरकेँ हवेली कहैत अछि। मदनक नाना गोकूलबाबू पुरान जमीन्दारक बेटा, तइमे रिटायर डिप्टी कलक्टर। गामक गरीब-गुरबा हुनका हाकिम मलिक कहैत छेलनि।

एक दिन मदन अपना संग अमरकेँ अपना नानीक घर लऽ जाइत छल। मैल-कुचैल कपड़ामे अमर। ऐसँ पहिने ओ कहियो हवेली नै गेल रहए। ओ धखाइते-धखाइत मदनक संगे हवेलीक सीढ़ीपर चढ़ल। आगू बढ़ल। देखिते मदनक नानी मदनकेँ पुछलखिन-

"ई छौड़ा के छी। तोँ एकरा भीतर किए अनै छेँ?"

तैपर मदन बाजल-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"नानी ई अमर छी। हम एकरा संगे खेलाइ छी। एकरासँ हमरा दोस्ती भऽ गेल अछि।"

मदनक बात सुनि नानी मदनकेँ डँटैत कहलखिन-

"समूचा कोयलखमे तोरा यएह छौड़ा दोस्ती करैले भेटलौ। छोट लोकसँ दोस्ती करै छैं!"

तैपर मदन बाजल-

"नानी ई छोट कहाँ अछि। ई तँ हमरे अतेटा अछि।"

"तोँ नै बुझलेँ। ई सभ छोट जातिछी। एकरा सभकेँ हम सभ अपना हवेलीक भीतर नै आबए दइछिऐ।"

अमर दिस देखैत नानी फेर बजली-

"रे छौड़ा, केकर बेटा छीही?"

अमर बाजल-

"भोला चौपालक।"

"कह तँ खतबे जातिक छौड़ाकेँ हवेलीक भीतर अनै छैँ। हवेलीओ छुआ जाइत। रे छौड़ा भोलबा बेटा, जो भाग एतएसँ।"

अमर ओतएसँ चलि देलक। मदन किछु बूझि नै पौलक। बकर-बकर नानीक मुँह दिस तकैत रहल। नानी ओकर हाथ पकड़ि हवेलीक भीतर लऽ गेली।

अमर अपना आँगन जा माएकेँ सभ गप कहलक। माए पुछलखिन-

"तूँ हवेली गेलही किए?"

तैपर अमर बाजल-

"माए, हमरा तँ मदन लऽ जाइत रहए। हम कहियो कहाँ हवेली दिस जाइ छी।"

माए-

"बाउ रौ, उ सभ पैघ लोक छथिन। हम पनरह बर्खसँ कोयलखमे छी मुदा आइ धरि हवेलीक भीतर नै गेलौं। कहियो काल खेरही तोड़ए हाकिम मालिकक खेतमे जाइ छी तँ हेवलीक ओसारक निच्चेसँ खेरही राखि आ बोइन लऽ घूमि जाइ छी।"

अमर माएक बात नै बूझि सकल। पुछलक-

"पैघ लोक केकरा कहै छै?"

माए जवाब देलखिन-

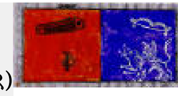
"पैघ लोक माने बड़का आदमी। धनीक आदमी। पढ़ल-लिखल हाकिम-हुकूम।"

अमर-

"हमहूँ पैघ लोक बनब।"

माए-

"पढ़बीही तब ने पैघ लोक बनमेँ। देखै छीही ने जीतनीक मामा पढ़ि-लिख कऽ हाकिम बनलखिन। ओ अबै छथिन तँ हाकिमो मालिक हुनका चाह-पान करबै छथिन। तहूँ मनसँ पढ़-लिख आ हाकिम बन।"



माएक बात सुनि अमर बाजल-

"तूँ तँ हमरा किताबो-काॅपी ने आनिदइ छीही। टीशनो ने धरा दइ छीही। कहैत रहै छीही गाए चरा आन।"

तैपर माए बजली-

"तूँ मोनसँ पढ़। तोरा कित्ताप-कौपी सभ आनिदेबौ। गाइओ चरबए नै कहबो। टीशनो धरा देबौ।"

अमर बाजल-

"हम मोनसँ पढ़ब आ हाकिम बनब।"

अमर पढ़ए लगल। ओ अपना किलासमे फस्ट करए। मैट्रिक आ इण्टरमे अपना जिलामे पहिल स्थान लौलक। चटिया सभकेँ टीशन पढ़ा कऽ बी.ए. आनर्स फस्ट क्लाससँ पास भेल। जीतनीक मामा हरियरीबला बीडीओ साहैबसँ भेँट केलक। ओ कहलखिन-

"कोनो भी कम्पीटीशनक तैयारी लेल पटनामे बैसए परतह। तइले ढौआ चाही।"

ई सभ गप्प अमर अपना माए-बाबूसँ कहलक। अमरक बाबू दस कट्ठा जमीनमे सँ पाँच कट्ठा जमीन बेच देलक। अमर पटनामे रहिबी.पी.एस.सी.क तैयारी करए लगल। गाममे कुट्टी-चालि चलए लगलै। जे जमीन बेच कऽ सभटा बेरबाद करैए फल्लमा। मुदा तेकर परवाह नै केलक अमरक पिता।

पहिले खेपमे अमर सफल भऽ गेल, बी.डी.ओ.क पदपर चयन भऽ गेलै

प्रशिक्षणक बाद अमरक पदस्थापना निर्मली अनुमण्डलमे भेल। योगदानक दोसरे दिन हुनका चैम्बरमे हुनकर सहायक संचिका लऽ कऽ आएल। बी.डी.ओ. साहैबकेँ ओ चेहरा जानल-पहचानल लगलनि ओ गौर करि कऽ सहायक दिस ताकए लगलखिन। आ दिमागपर जोर देलखिन जे हिनका तँ केतौ देखने छियनि। मुदा केतए से मोने ने पड़नि। सहायकसँ पुछलखिन-

"अहाँक नाओं की छी?"

सहायक जवाब देलखिन-

"मदन कुमार ठाकुर।"

मदन नाओं सुनिते बी.डी.ओ साहैबकेँ बचपनक सभ घटा मोन पड़िोलनि। हुनका भेलनि शाइत ओ वएह मदन छी जे हमरा हवेली लऽ जाइत छल, मुदा ओकर नानी हमरा डपैट कऽ भगा देने रहए। मुदा शंका समाधान दुआरे पुछलखिन-

"अहाँक मामा गाम केतए अछि?"

सहायक जवाब देलखिन-

"जी, हमर मामा गाम कोयलख भेल। आ नानास्व. गोकूल प्रसाद ठाकुर।"

आब तँ बी.डी.ओ साहैबकेँ कोनो शंके ने रहलनि। ओ सभ संचिका पढ़ि कऽ ओइपर दसखत करैत कहलखिन-

"साँझमे हमरा डेरापर आएब।"

तैपर सहायक मदन पुछलकनि

"सर, कोनो खास गप्प छै की?"

ISSN 2229-547X VIDEHA

बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"अहाँ आएब तँ ओतए आम आ खास मालूम भऽ जाएत।"

सहायककेँ छातीक धड़कन बढ़ि गेलनि। ओ सोचए लगला की बात छिऐ। किएक साहैब डेरापर बजौलनि। कियो चुगली तँ ने कऽ देलक।

साँझमे मदन बी.डी.ओ साहैबक डेरापर पहुँचला। बी.डी.ओ. साहैब हुनका बड़ प्रेमसँ भीतर लऽ गेलखिन। एकटा कुरसीपर अपना बैसला आ दोसरपर इशारा करैत मदनकेँ बैसैले कहलखिन। दुनू गोटे कुरसीपर बैसला। बी.डी.ओ. साहैब पत्नीकेँ सोर पाड़ैत कहलखिन-

"चाह-जलखैक ओरियान करू। मदन एला।"

मदनकेँ किछु बुझेबे ने करए। ओ बाजल-

"सर, कथी लऽ बजेलौं। की आदेश छै।"

तैपर बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"सर नै अमर बाजू अमर। हम वएह अमर छी जेकरा संगे अहाँ मामा गाममे कबड्डी, हाथी चुक्का खेलैत रही। एक दिन अहाँ अपना नीनीक हवेली लऽ जाइत रही तँ अहाँक नानी अहाँपर बिड़ैत हमरो डँटने रहथि। की अहाँकेँ ओ घटना मोन अछि?"

मदनकेँ ममहरक सभ गप मोन पड़िगेल। ओ ठाढ़ भऽ कऽ हाथ जोड़ैत बाजल-

"सर, हमरा माफ कऽ दिअ। हम बड्ड लज्जित छी।"

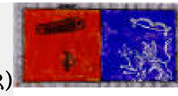
तैपर बी.डी.ओ. साहैब कहलखिन-

"फेर सर! अमर बाजू। अमर।"

कहि बी.डी.ओ. साहैब ठाढ़ होइत पुन: बजला-

"आउ मदन, गला मिलू।"

कहि दुनू बाँहि फैला देलखिन। मदन झिझकैत अमरसँ गला मिलल। मदनक दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगलै।ooo

 
ISSN 2229-547X VIDEHA

दिव्या

निर्मली टीशनक पाछू, रेलबे परिसरेमे गुरु-चेलाक खेल भऽ रहल छल।गुरू लूंगी आ झोलंगा जकाँ कुरता पहिरि हाथमे डमरू नेने छला। लगभग दस बर्खक बालक चेला छल। ओकर समुच्चा देह कपड़ासँ झाँपल छल। चारू दिससँ लोक ठाढ़ भऽ खेलक मजा लेबए लेल तैयारछल। गुरु डमरू बजा चेलासँ पुछलखिन-

"बोल चेला की हाल-चाल छौ?"

चेला जवाब देलक-

"गुरुजी, हमर हाल-चाल एकदमटनाटन अछि। अहाँ अपन कहू।"

गुरु कहलखिन-

"हमहूँ ठीक छी। अच्छा ई बता अखनि तों छेँ केतए।"

चेला बाजल-

"अखनि हम बरही गाममे छी।"

गुरु-

"ई बरही गाम केतए छै?"

चेला-

"बरही गाम नेपाल अधिराज्यक सप्तरी जिलामे पड़ै छै। राजविराजसँ लगधग तीन किलोमीटर दछिन। बरही गामसँ उत्तर पछिमी कोसी नहरछै।"

गुरु-

"अच्छा ई बता ओतए की कऽ रहल छेँ।"

चेला-

"विदेह इन्टरनेट पत्रिकामे खबरि जुटाबक समदियाक काज करए लगलौं हेन। नेपालक दौरापर छी।"

गुरु-

"तँ बरही गाममे एहेन काेन घटना भेलै जे तों बरही गाममे छेँ?"

चेला-

"घटना अथवा दुघर्टना तँ नै भेलै मुदा एकटा नव चीज जरूर भेलै।"

गुरु-

"काेन नव चीज भेलै हेन, कनी फरिछा कऽ बाज।"

चेला-

"बरही गाम सप्तरी जिलाक सदरमुकाम राजविराज बजारक लग रहितो मुख्य रूपसँ किसानक गाम छी। पश्चिमी कोसी नहरिसँ दछिन छै। सिचाईक भरपुर साधन रहैक कारण गरमा धान आ अगहनी धानक उपज बड़ नीक होइ छै।"

गुरु-

"कोन खेती गिरहस्तीक गप शुरू कऽ देलँह। नव बात जे भेलै से बाज ने।"

चेला-

"हम सभ गप फरिछा कऽ कहै छी। अहाँ धैर्यसँ सुनू। बरही गाममे रूपलाल नामक एकटा किसान छथि। हुनका एकटा बेटा आ एकटा बेटी छन्हि। बेटाक नाओं विवेक अछि। आे विराटनगर अस्पतालमे पेथोलौजिष्ट छथि। अपन प्राइवेट जाँच-घर सेहो रखने छथि। रूपलालक बेटी दिव्या बी.ए. पास कऽ राजेविराजमे बी.एड. कऽ रहली हेन।"

गुरु-

"कोन आहे-माहेक कथा पसारि देलँह से नै जानि। हम कहै छियौ नव बात बता।"

चेला-

"एतएसँ शुरू होइत अछि नव बात। अखनि हम नव बात जे भेल तेकर पृष्ठभूमिमे चलि रहल छी। अहाँ कनी धैर्यसँ सुनियौ।"

गुरु-

"अच्छा बता। आब हम बीचमे नै टोकबौ।"

चेला-

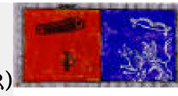
"हँ तँ हम कहैत रही जे रूपलालक बेटी जेकर नाओं दिव्या छी, राजेविराजमे बी.एड. कऽ रहली हेन। साल भरि पहिने दिव्याक बिआहक बात-चीज ठील्ला गामक रामअवतारक बेटाक संग चलल। रामअवतारक बेटा अनिल भोपालमे इंजीनियरिंग कऽ पढ़ाइ कऽ रहल छला। दस लाख नेपाली टकामे बात पक्का भऽ गेल छल। दुनू दिससँ छेका-छुकी सेहो भऽ गेलै। छह महिना पहिने अनिल इंजीनियरिंगक डिग्री लऽ भोपालसँ नेपाल आएल। दूर संचार विभागमे भैकेन्सी भेल। ओहो आवेदन देलक।

अनिलक पिताजी रामअवतार तेज आदमी अछि। ओ दौग-धूप केलक। चारि लाख टका घूस मांगलकै। रामअवतार दौगल बरही आएल।रूपलालकेँ कहलखिन- अहाँ जमाएकेँ नौकरी भऽरहल अछि। चारि लाख टका घूस लगै छै। अहाँ दस लाख टका जे बिआहमे देब तइमे सँ चारि लाख टका अखनि दऽ दिअ। बाँकी छह लाख टका बिआहसँ दस दिन पहिने दऽ देब। जमाएकेँ नोकरी भऽ जाएत तँ बेटी रानी भऽ कऽरहत। रूपलाल विवेककेँ फोनपर सभ बात बतौलखिन। विवेक कहलकनि, ठीक छै, अहाँ रामअवतार बाबूकेँ विराटनगर भेज दियौ। हम चारि लाख टका दऽ देबनि। रामअवतार विराटनगर जा विवेकसँ चालि लाख टका आनि बेटाकेँ संग कऽ काठमाडू गेला। घूस दऽ बेटाकेँ नोकरी लगौलनि।

गुरु बजला-

"अच्छा, ई बता दिव्याक बिआह रामअवतारक बेटा अनिलसँ भऽ गेल ने।"

चेला-



"असलका गप तँ आब सुनाबै छी। कनी धियानसँ सुनियौ ने। आइसँ दस दिन पहिने रूपलाल अपना भातीजकेँ संग कऽ ठील्ला पहुँचला। रामअवतारकेँ बिआहक दिन पक्का करैले कहलखिन। ओ तीनटा दिनक प्रस्ताव रामअवतार लग रखलनि। आ कहलखिन अही तीनू दिनमे जे दिन अहाँकेँ सहुलियत हुअए से दिन तँइ करि लिअ। ढौआ जे बाँकी अछि ओ नगद लेब आकि चेक, सेहो कहि दिअ।"

रामअवतार कहलखिन-

"यौ रूपलाल बाबू, हमरा बेटाक भठियन गामबला पनरह लाख टका नगद, एकटा फ्लशर मोटर साइकिल आ पाँच भरि सुन दऽ रहल अछि। अहाँक बेटीसँ हमरा बेटाक बिआहक गप पक्का अछि। अहाँ अनिलक नोकरी लेल चाािर टका देने छी। तँए अहाँसँ मात्र पनरह लाख टकेटा लेब। गाड़ी आ सुन छोड़िदेब। जँ अहाँ पनरह लाख टकापर बिआह करैले तैयार छी, तँ फागुन दस गतेक दिन पक्का भेल। हमरा नगद टका दी अथवा चेक दी, हम सभमे तैयार छी। अहांकेँ जइमे सुविधा हुअए से करब।"

तैपर रूपलाल बजला-

"अहाँसँ तँ हमरा दसे लाखपर बात भेलअछि। आब अहाँ मन नै बढ़ाउ। हम बँकियौता छह लाख टकाक चेक भातीज मार्फत भेज देब।"

रूपलालक गप सुनि रामअवतार तैशमे बजला-

"जँ हमरा बेटाक संग अहाँकेँ अपना बेटीक बिआह करबाक अछि तँ मोल-मोलाइ छोड़ू आ पनरह लाख टकामे बात पक्का करि तीन दिनक भीतर बाँकी एबारह लाख टका पहुँचाउ। नै तँ कुटुमैती नै हएत। अहाँ चारि लाख टका हम अगिला महिनामे आपस कऽ देब।"

आब तँ रूपलाल झमा गेला। आँखिक आगू अन्हार पसरि गेलनि। किछु फुड़बे ने करनि।
गुरु फेर टोकलखिन-

"अँइ रौ चेला, ई रामअवतार तँ बड़ नीच आदमी बुझाइत अछि।"

चेला बाजल-
"आगू सुनियौ ने।"
गुरु-

"अच्छा कह, आगू की भेलै।"

चेला कहए लगल-

"कनीकालक बाद रूपलाल अपनाकेँ सम्हारैत बजला, ठीक छै हम गाम जाइ छी। बेटासँ विचार करब। ओ जे कहत सएह करब।"

रूपलाल आपस गाम आबि गेला। मुँहक उदासी देखि हुनकर पत्नी बूझि गेली जे शाइत दिन पक्का नै भेल। कोनो झंझट लगि गेल। दिव्या राजविराजसँ पढ़ि कऽ आपस नै आएल छेली। रूपलाल सभ बात पत्नीकेँ बतौलखिन। पत्नी कहलकनि, विवेकसँ फोनपर गप करू। तैपर रूपलाल बजला, अखनि तँ ओ क्लिनिकपर हएत रातिमे निचेनसँ गप करब। रूपलाल दुनू परानी रातिमे खेबो ने केलनि।

रातिमे रूपलाल मोबाइलपर विवेकसँ गप करए लगला। गप करिते-करिते ओ कानए लगला। जखनि ओ बेटासँ मोबाइलपर गप करै छला, तखनि दिव्या अपना कोठरीमे पढ़ै छेली। कोनो गपक पता नै छेलनि। जखनि पिताजीकेँ कानब सुनली तखनि कान पाथि कऽ सभ गप सुनए लगली। सभ गपक थाह लगि गेलनि जे पिताजी फोनपर किए कनै छथि। दिव्याकेँ भरि राति नीन नै भेलै। ओ भरि राति सोचिते रहली। रामअवतार केते नीच आ

ISSN 2229-547X VIDEHA

कमीना अछि। चारि लाख टका हमरे बाबूजी सँ लऽ घूस दऽ बेटाकेँ नोकरी दियौलक। आइ बेटा नौकरी करए लगलनि तँ मन बढ़ि गेलनि। पाँच लाख टका बेसी कऽ हमरा बाबूजी सँ माँ छथिन। एहेन नीच आ लोभी मनुखक बेटासँ हम अपन बिआह किन्नौं ने करब, चाहे जिनगी भरि कुमारिए किए ने रहि जाइ।

गुरु फेर बजला-

"वाह! वाह! दिव्या बड़ नीक बात सोचलक।"

चेला बाजल-

"आगू सुनियौ ने।"

गुरु-

"अच्छा सुना।"

चेला कहए लगल-

"विवेक फोनपर पिताजीकेँ कहलकनि, बाबू अहाँ जुनि कानू। हमरा एकेटा बहिन अछि दिव्या। अहाँक पएरक कृपासँ हम चारि-पाँच हजार टका डेली कमाइ छी। की करबै रामअवतार बाबूकेँ लोभ भऽ गेलनि। हम पाँच लाख टका आरो देबै। अहाँ शुक्र दिन रामअवतार बाबूकेँ बरही बजालियौ। हम नगद एगारह लाख गिन देबै। चारि लाख तँ देनैहिए छियनि। शुक्र दिन साँझ धरि हमहूँ गाम पहुँच जाएब।"

शुक्र दिन साँझमे रामअवतार बरही पहुँचला। सोचने रहथि जे नगद ढौआ देता तँ राजेबिराज नेपाल बैंक लिमिटेडमे ड्राफ्ट बनबा लेब। नगद ढौआ लऽ जाइमे खतरा अछि। साँझमे विवेको गाम पहुँचला।

खेनाइमे रामअवतारकेँ खूब सुआगत भेलनि। तरूआ, भुजुआक अलाबे खस्सीक मासु सेहो रहए। मुदा दिव्या एकदम गुमशुम।

शनि दिन दस बजे रामअवतारकेँ पराठा आ अल्लुक भुजिया, हलुआ, सेबैक खीर आ रसगुल्लाक जलखै खुआएल गेल। जलखै करा एकटा कोठरीमे विवेक, रामअवतार आ रूपलाल बैसला। विवेक पुछलकनि-

"ढौआ केना लऽ जेबै?"

तैपर रामअवतार कहलखिन-

"ढौआ दऽ दिअ आ अहाँ चलू राजबिराज, नेपाल बैंकमे ड्राफ बनबा देब।"

तैपर विवेक बजला-

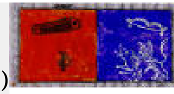
"आइ तँ शनि छी। छुट्टीक दिन छी। बैंक बन्न हएत।"

रामअवतार बजला-

"अच्छा अहाँ टका गिन कऽ दिअ। हम समधीकेँ संग कऽ ठील्ला चल जाएब। दू गोटे रहब तँ डर कम रहत।"

विवेक आलमारी खोलि रूपैआ निकालि गिन कऽ रामअवतारकेँ देबए लगला आकि हहाएल-फुहाएल दिव्या पहुँच कऽ बजली-

"रूकू भैया, रूकू। रूपैआ राखू। हम एहेन लोभी आ कमीना आदमीक बेटासँ अपन बिआह किन्नौं नै करब। चाहे जिनगी भरि कुमारि किएक ने रहि जाइ।"



ISSN 2229-547X VIDEHA

दिव्याक गप सुनि, सभ कियो अवाक् भऽ गेल। विवेक आ रूपलाल समझाबैक परियास केलनि तँ दिव्या अपना हाथमे एकटा शीशी देखबैत कहलकनि

“ऐ शीशीमे जहर छै। जँ अहाँ सभ जिद्द करब तँ हम जहर पीब लेब।”

रामअवतार बाबू दिस घूमि बजली-

“सुनू रामअवतार बाबू, अहाँ हमरा बाबूजीसँ चारि लाख टका लऽ गेल छी। जाबे धरि चारि लाख टका आपस नै करब अहाँ बरहीसँ आपस ठील्ला नै जा सकै छी।”

गुरु डमरू बजबैत नाचए लगला। थोड़े काल नाचि बजला-

“बड़ नीक बड़ सुन्नर। दिव्याकेँ बहुत-बहुत धैनवाद।”

❍❍❍

ISSN 2229-547X VIDEHA

सभसँ बड़का भीआइपी गेस्ट

हम आँगनमे चाह पीबैत रही। तखने पत्नी आबि टोकली-

"यै, सुनै छिऐ?"

हम कहलियनि-

"हँ, कहू ने की कहै छी।"

पुछलनि-

"बम्बइ आम लऽ कऽ जीतू बौआ ओतए कहिया जेबै?"

अकचकाइत हमरा मुँहसँ बहराएल-

"हँ। ठीके मोन पाड़लौं। परसू रबि दिन भोरका बस पकड़ि लेब। बारहे बजे तक पटना पहुँच जाएब। बम्बइ आमो खूब पाकए लगल अछि। चारि आना आम गाछेमे पाकि कऽ खसि पड़ल। काल्हि केकरो बजा कऽ आम तोरा कऽ रखि लेब आ परसू छह-बजिया बस पकड़ि लेब।"

पत्नी कहलनि-

"दस-बीस गो गछपकुओ लऽ लेबै।"

हँ-मे-हँ मिलबैत कहलियनि-

"हँ-हँ अबस्से लऽ लेबै।"

हम आ जीतू दू भाँइ। हमर नाओं भोगेन्द्र आ हमर छोट भाए जीतेन्द्र। माए-बाबू हमरा भोगी आ जीतेन्द्रकेँ जीतू कहै छला। माए-बाबूक देखा-देखी आनोआन लोक हमरा भोगी आ ओकरा जीतूए कहैत अछि। हम गाममे रहि कऽ खेती-गिरहस्ती करै छी। खेती की करब। अपना तँ मात्र एक्के बीघा खेत अछि। दू बीघा खेत लालबाबूसँ मनकूतपर नेने छी। जीतू पटनामे पंजाब नेशनल बैंकमे पी.ओ अछि।

दोसर दिन हम एकटा गछचढ़ा लड़िकाकेँ बजा आम तोड़ेलौं। लगधग पाँच सए आम भेल। जइमे सए सबा-सए पकले रहए। सभटा आम एकटा बोरामे लऽ मुँह बान्हि कऽ रखि लेलौं। एकटा झोरामे पचासटा गछपकू आम सेहो ओरिया कऽ रखि लेलौं।

अगिला दिन साइकिलपर आम लऽ नवटोली चौकपर गेलौं। चौकेपर एकटा चिन्हारए ऐठाम साइकिल रखि सतबजिया बसपर चढ़लौं। लगधग डेढ़ बजे दूपहरमे पटना पहुँचलौं। जीतू डेरेपर छल। हमरा देखिते आबि कऽ गोर लगलक आ गामक समाचार पुछलक। हम असिरवाद दैत कहलिऐ-

"गामक सभ समाचार ठीके अछि। तों अपन समाचार कहह सभ कियो नीके-ना छह किने?"

जीतू कहलक-

"अहाँक असिरवादसँ हम दुनू गोटे कुशल छी।"

हम कहलिऐ-

"भगवानक किरपा।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

जीतू बाजल-

"केकरो मोबाइलसँ फोन केने रहितिऐ तँ खाना बनल रहितए।"

हम कहलिऐ-

"केकरा मोबाइलसँ फोन करितौं।"

जीतू फेर बाजल-

"एमकी गाम जाएब तँ एकटा मोबाइल नेने आएब। मोबाइल रहत तँ दुनू भाँइक बीच गप्पसप्प होइत रहत। भौजीओसँ गप हाएत। अहाँफ्रेश भऽ कऽ चाह पीबू। चाह पी कऽजाबे स्नान करब ताबेमे खेनाइ बनि जाएत।"

हम बाथरू जा फ्रेश भेलौं। फ्रेश भऽ ड्राइंगरूममे आबि बैसलौं। जीतूक कनियाँ एकटाप्लेटमे दालमोट आ छह-सात गोट बिस्कुट रखि हमरा गोर लगली। हम कहलियनि-

"नीके रहू।"

जीतू एक जग पानिआ एकटा गिलास नेने आएल आ कहलक-

"ताबे पानि पी कऽ चाह पीब लिअ।"

हम दालमोट आ बिस्कुट खाए लगलौं। पाँचे मिनटक पछाति कनियाँ दू कप चाह दऽ गेली। हम दुनू भाँइ चाहो पीबी आ गाम-घरक गपोसप्पो करी।

करीब पनरह-बीस मिनटक पछातिकनियाँ आबि कऽ बजली-

"भात-दालि बनि गेल अछि। जाबे भायजी स्नान करथिन, तरकारीओ बनि जाएत।"

हम बजलौं-

"एते जल्दी केना बनि गेल।"

जीतू कहलक-

"भैया, गैसपर प्रेशर कुकरमे भात-दालि बनबैमे देरी नै लगै छै। आब अहाँ जल्दी-जल्दी नहा लिअ।"

हम बाथरूमे जा कऽ स्नान कऽ कपड़ा बदलि ड्राइंगरूममे आबि कऽ बैसलौं। हमरा बसिते देरी जीतू एक जग पानि आ गिलास टेबूलपर रखि भीतर चलि गेल। कनियाँ एकटा थारीमे भात, कटोरीमे दालि आ एकटा प्लेटमे तीमन आ दोसर प्लेटमे भुजियाआ पापड़ दऽ गेली। जीतू एकटा कटोरीमे घीउ नेने आएल। किछु घीउ भातमे ढारि बाँकी दालिमे ढारि बाजल-

"आब भोजन करू।"

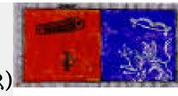
हम भोजन करए लगलौं।जाबे धरि हम खेनाइ खेलौं जीतू हमरा लग ठाढ़ रहल। कनियाँ परसनपर परसन आबि कऽ दैत रहली। भोजन केलाबादहम हाथमुँह धोइ कुरसीपर बैसलौं।

जीतू लगमे आबि बाजल-

"आब अपने अराम करू।"

कहलिऐ-

"जा तहूँ अराम करए गऽ"

ISSN 2229-547X VIDEHA

हम ओछाइनपर अराम करए लगलौं। हमरा पछिला सभ गप मोन पड़ि गेल।इण्टरमे पढ़ैत रही। जीतू सेहो अठमामे पढ़ैत रहए। जीतू पढ़ैमे चनसगर रहए। ओ अपना किलासमे फस्ट करए। हमर बिआह भऽ गेल रहए। बाबूजी हमरा बिआहेमे धुरबहुर करा दुरागमनो करा देने रहथि। मुदा हमर कनियाँ तैयो नैहरेमे रहैछेली। बाबूजी दिल्लीमे दालि मीलमे मोटियाक काज करै छला। हुनका ओतए बोखार लगि गेलनि। ठीकसँइलाज नै करा सकला। तेकर नतीजा भेलनि जे बड़ कमजोर भऽगेला। डाक्टर कहलकनि-

"कालाजार हो गया है।"

तखनि हमरे एकटा गौआँ बहादूर काकाहुनका नेने निर्मली टीशनपर उतरला। ओइ समैमे सवारीक सुविधा नै छेलै। हमर बाबूजी तेतेक कमजोर भऽगेल छला जे पएरे गाम नै आबि सकला। तखनि बहादूर काका बाबू जीकेँ मोसाफिर खानामे बैसा अपने गामआबि हमरा माएकेँ सभ बात कहलखिन। हम खेनाइ खा कऽ निर्मली कौलेज जाइले साइकिल निकालने छेलौं। माए हमरा लग आबि कहलक-

"भोगी, केकरो टायरगाड़ी लऽ कऽनिर्मली टीशन चलि जा। गाड़ीपर बैसा कऽ बाबूकेँ आनए पड़तह। बाबूजी मोसाफिर खानामे छथुन। बड़ दुखित छथिन। चललो ने होइ छन्हि। कहाँदिन कालाजार भऽ गेलनि। बहादूर बौआ दिल्लीसँ संगे नेने एलनि। वएह आबि कऽ कहि गेला हेन।"

हम साइकिल रखि मने-मन हियासए लगलौं जे केकर टायर गाड़ी लऽ जाइ। हमर नजरि बेचन काकापर गेल। हम बेचन काका ओइठाम विदा भेलौं। बेचन काका सोकबामे बैसि कऽ बाँसक पातक कुट्टी कटै छला। हमरा देखिते बजला-

"आबह-आबह भोगी। कहऽकी हाल-चाल छह। आइ कौलेज नै गेलह की?"

कहलियनि-

"काका हमर हाल-चाल नीक नै अछि। बाबूजी बड़ दुखित छथि। कहाँदुन कालाजार भऽ गेलनि हेँ। चललो-फिरल नै होइ छन्हि। दिल्लीसँ आबि निर्मली निर्मली टिशनपर बैसल छथिन। बहादूर काका संगे एला हेन। वएह अखनि कहि गेला।"

बेचन काका बजला-

"तँ टायरगाड़ी लऽ जेबहक बाबूकेँ आनैले?"

कहलियनि-

"हँ, काका। तँए एलौं हेन।"

कहलनि-

"ठीक छै कनी जलखै कऽलइ छी। ताबे बरदो खाइ छै।"

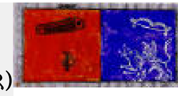
हम कहलियनि-

"हमहूँ गामपर सँ भेल अबै छी। अहाँ जलखै करि कऽ तैयार रहब।"

"ठीक छै।" ओ बजला।

हम गामपर आबि माएकेँ कहलिऐ-

"बेचन काका जलखै करै छथिन। जलखै कऽ टायर जोति देथिन। किछु पाइ-कौड़ी छौ तँ दे। हएत तँ बाबूकेँ लऽ रामानन्द डाक्टरसँ देखा देबनि।"



ISSN 2229-547X VIDEHA

माए घर गेली। घरसँ एकटा फुच्ची निकालि अनली। फुच्चीकेँ उनटि दसटकही, पँचटकही, दू-टकही, एकटकही सभटा सिक्का सभ निकालि गिनलनि। सभटा मिला कऽ पाँच सए पचपन रूपैआ भेल। सभटा पाइ दैत माए कहली-

"बाबूकेँ डाक्टरसँ जँचा दबाइ कीनि लिहेँ।"

पाइ लऽ बेचन काका ओतए विदा भेलौं। बेचन काका टायरपर पुआर दऽ एकटा सतरंजी बिछा हमरे बाट तकैत रहथि। हमरा देखिते बजला-

"गाड़ीपर बैसह। जोइत दइ छिऐ।"

हम टायरपर बैसलौं। बेचन काका टायर जोइत विदा भऽ गेला। साढ़े बारह बजे हम सभ निर्मली टीशन पहुँचलौं। हम मोसाफिर खाना गेलौं। हमर बाबूजी मोसाफिर खानामे तौनी ओछा पड़ल छला। एकदम नरकंकाल जकाँ हुनकर शरीर भऽ गेल रहनि। हम लगमे जा टोकलियनि-

"बाबू, बाबू?"

ओ उठि कऽ बैसला आ बजला-

"के भोगी! गाड़ी अनलह की?"

बाबू जीक पएर छूबि गोर लागि कहलियनि-

"हँ बाबू। बेचन कक्काक टायर अनलिऐ हेन। अहाँ किछु पानि-तानि पीलिऐ किने?"

बाबूजी बजला-

"हँ। एक गिलास बदामक सतुआ पी कऽ एक कप चाह पीने रहिऐ।

"अच्छा उठू चलू टायरपर बैसू गऽ। डाक्टर रमानन्द बाबू लग चलै छी। हुनकासँ देखा दइ छी। तेकर पछाति खेनाइ खाएब।" -हम कहलियनि।

बाबूजी बजला-

"मुदा हमरा लग ढौआ कहाँ छह।दू महिनासँ बैसिले छेलौं। जेहो ढौआ छल, सभ दबाइमे खरच भऽ गेल।"

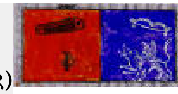
हम कहलियनि-

"अहाँ ढौआक चिन्ता जुनि करू। हमरा माए किछु ढौआ देलक हेन। आ ेइसँ ताबे इलाज करा दइ छी। डाक्टर साहैब की कहै छथि, तेकर बाद आगूक बात आगू सोचब।"

बाबू जीकेँ लऽ कऽ हम डाक्टर रामानन्द बाबूक क्लिनिकपर एलौं। जाँचि कऽ डाक्टर साहैब कहलखिन-

"हम दबाइ लिखि दइ छी। दबाइ लऽ कऽ हमरासँ देखा कऽ शुरू कऽ दियौ। मुदा हिनकर इलाज नीकसँ करबए पड़त। दरभंगा लऽ जा कऽ होसपीटलमे भर्ती करा दियौ।"

डाक्टर साहैबक फीस दऽ दबाइ कीनिलौं। किशन होटलमे खेनाइ खेलौं। खेनाइ खा तीनू गोटे टायरपर बैसि विदा भेलौं। गोसाँइ डुमैसँ पहिने गाम पहुँचलौं। माए बाबूक हालति देखि बोम फाड़ि कऽ कानए लगली। माएकेँ कनैत देखि जीतूओ कानए लगल। हमरो आँखिसँ दहो-बहो नोर जाए लगल छल। बेचन काका हमरा हमरा सभकेँ चुप करबैत बजल छला-



ISSN 2229-547X VIDEHA

"कनने, खीजनेसँ किछ ने होइ जेतह। पाँचसात हजार टाकाक ओरियान कऽ दरभंगा लऽ जाहुन आ नीकसँ इलाज कराबहुन।"

पाँच कट्ठा खेत सात हजारमे भरना रखि चारिम दिन हम, माएकेँ संग कऽ बाबूकेँ लऽ दरभंगा गेलौं। बाबू जीकेँ दरभंगा अस्पतालमे भर्ती करेलौं डाक्टर साहैबसँ पुछने रहिऐ-

"सर, बाबूजी केतेक दिनमे ठीक भऽजेथिन।"

डाक्टर साहैब बजल रहथिन-

"रोगीकेँ रोग गरसि नेने अछि। लीवर सेहो ठीकसँ काज नै करै छै। तँए किछु कहब मोसकिल'।

दरभंगा जाइसँ पहिने माए बेचन काका आ जीतूकेँ हमरा सासुर भेज हमरा कनियाँकेँ विदागरी करा अनने रहथिन। दिल्लीसँ एलाक मासे दिनक भीतर बाबूजी हमरा सभकेँ छोड़िदुनियाँसँ चलि गेला। जीतू बाबू जीक पएरपर माथा पटकि-पटकि कनैत रहए।बेचन काका जीतूकेँ समझबैत कहने रहथिन-

"तोरा तँ बाप तुल जेठ भाए भोगी छेबे करथुन। चुप भऽ जा। भोगी तोरा सभ किछु करतऽ। पढ़ेतह-लिखेतह, बिआह-शादी करतऽ।"

जीतू हमर पएर पकड़ि कानए लगल रहए। हम जीतूकेँ भरि पाँजमे लऽ कनैत कहने रहिऐ-

"तों चिन्ता जुनि कर। हम तोहर जेठ भायछियौ। तोहर सभ जवाबदेही हमरापर दऽ बाबूजी चल गेला। हम अपन फर्ज पूरा करब।"

बाबू जीक मरला बाद हम पढ़ाइ छोड़ि खेती-गिरहस्थी करए लगलौं।

बाबू जीक सोगे माए जे सोगेली से ओहो छबे मासक भीतर हमरा सभकेँ छोड़ि बाबूएजी लग स्वर्ग चल गेली। जीतूक दुनू आँखि कनैत-कनैत फूलि गेल छल। ओ माइक पएरपर माथ पटैकपटैक कानै छल। हमर कनियाँ जीतूकेँ सम्हारने छली। मरैसँ पहिने माए हमरा कहने छेली-

"बौआ भोगी, जीतूकेँ पढ़ा-लिखा हाकिम बनाबिहऽ।"

हम माएसकेँ कहने छेछिऐ-

"माए चिन्ता जुनि कर। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा डीहोबेचए पड़त तँ बेचि लेब।"

जीतू पढ़ैमे तँ चन्सगर रहबे रहए। ओ मैट्रिसँ लऽ कऽ एम.कॉम. धरि फर्स्ट डिविजनसँ पास केलक। एम.कॉम. केला बाद जीतू पटनामे रहि प्रतियोगिता परीछाक तैयारी करए लगल। जीतूकेँ पढ़बैमे हमरा एक बीघा खेत बेचए पड़ल।

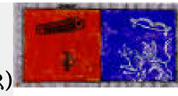
एम.कॉम. केलाक बाद साले भरिक भीतर जीतू पंजाब नेशनल बैंकमे पी.ओ, पदपर बहाल भऽ गेल। जइ बैंकमे ओकरा नौकरी भेटल ओ पटने शहरमे अछि।

हाजीपुरक स्टेट बैंक मैनेजरक बेटी संग जीतूक बिआह भेल। जीतूक एकटा जेठका सार पी.एम.सी.एच.मे डाक्टर छथिन। ई सभ सोचैत-साेचैत हम नीन पड़ि गेलौं।नीन टुटल तँ सुनलिऐ, जीतू अपना कनियाँकेँ कहैत रहनि-

"भैया रबि दिनकेँ माछ-मासु नै खाइ छथिन। तीमन तरकारीमे की सभ आनए पड़त।"

कनियाँ बजली-

"अल्लू-पीऔज तँ अछिए। परोर, रामझुनी, करैला आ सजमनि लऽ लेब।"



ISSN 2229-547X VIDEHA

जीतू बाजल-

“अच्छा झोरा दऽ दिअ। हम जक्सन जाइ छी ओम्हरेसँ तरकारी कीनने आएब। हँ, भैया सुति कऽ उठथिन तँ चाह बना कऽ दऽ देबनि।”

कनियाँ बजली-

“अहाँ कहबै तब हम भायजी कें चाह बना कऽ दऽ एबनि। हमरा एतबो विवेक नै अछि की।”

जीतू बाजल-

“नै से नै। सएह कहलौं। ठीक छै हम जाइ छी।”

कनियाँ बजली-

“कनी सबेरे आएब। आन दिन जकाँ आठ राति नै बजा देबै।”

“हमरो धियान रहतै जे भैया आएल छथिन।” - ई कहि जीतू झोरा लऽ कऽ चलि गेल।

जीतूकेँ गेलाक पनरह-बीस मिनटक पछाति हम ओछाइनपर सँ उठि गेलौं बाथरूममे जा हाथ-मुँह धोइ कऽ कुरसीपर आबि बैसिले रही आबि कनियाँ एक गिलास पानि आ एक कप चाह दऽ गेली। चाह पीब हम कनियाँकेँ कहलियनि-

“हम टहलि अबै छी।”

कहि हम कपड़ा बदलि डेरासँ निकलि गेलौं सात-सबा-सात बजे आपस डेरापर एलौं। जीतूओ जक्सनसँ आबि गेल रहए। ओ कनियाँकेँ कहैत रहए-

“दुधक पैकेट आ सेबैक पैकेट नेने आएल छी। चीनी सेहो नेने एलौं हेन। तरकारीमे परोड़, रामझुमनी, करैला आ सजमनि अछि। सोल्हन्नी घीउमे पुरी छानि दियौ। अल्लू-परोरक तरकारी आ रामझुमनीक भुजिआ बना दियौ। सेबैक खीर सेहो बना दियौ।”

कनियाँ बजली-

“कनीए देशी घी घर-वेद रखने छी। जौं अखनि खरच करि लेब तँ कोनो भी.आई.पी. गेस्ट औत तँ केतएसँ आनब।”

“कोन भी.आई.पी.गेस्ट?” - जीतू पुछलकनि।

“अहाँक बैंक मैनेजर आ हमर डाक्टर भैया।” - कनियाँ बजली।

“हमरा लेल सभसँ बड़का भी.आई.पी.गेस्ट हमर भैया छथि। जे माए-बाबूक मुइला बादो हमरा पढ़बैमे कहियो ढौआक कमी नैहुअए देलनि। हमरा पढ़बै खातिर एक बीघा खेत बेचि देलनि। हुनके कृपासँ आइ हम बैंकमे पी.ओ. छी।”

जीतूक बात सुनि हमर छाती सूप सन भऽ गेल।

ISSN 2229-547X VIDEHA

फागुलाल साहु जीक किछु
विहनि कथा-

माइक डाँट

बात बचपनक छी। हमर माए सदिखन हमरा नजरि चढ़ौने रहै छेली। पढ़ाइ खातिर सदिखन समझबैत रहै छेली, स्कूलक समैमे खिया-पिया कऽ सहियारैत-पुचकारैत विद्यालय पठबैत छेली। मुदा हम तँ बेसी दिन अदहे बाटमे संगतुरियाक संग खेलैत रहि जाइत रही। जखनि विद्यालयक छुट्टीक समए होइ छल तखनि झटदनि घर आपस आबि जाइ छेलौं। हमर माए नीक-निकुत खाइले दऽ दइ छेली। मुदा हम तँ विद्यालयक चौकैठो तक ने जाइ छेलौं। तँए, मन तँ गुदगुदाइत रहै छल।

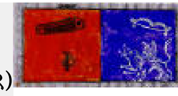
माए जखनि आन छात्र सभसँ पुछै छेलखिन हमर हाल-चाल तँ सभटा पोल खुलि जाइ छल। नै पढ़बा खातिर बहुतो टाँट-फटकार करैत लुलुआबैत छेली। हम मुँह लटकौने चुप्पी साधने सज्जनक स्वरूप बनौने लिबिर-लिबिर तकैत माइक ममता जगबैत अप्पन दोख छुपबैत सफाइ वचन बजैत रहै छेलौं। तेतबे नै पीटाइओ तँ खाइए पड़ै छल। पिताजीक सेहो आ गुरुजीक तँ अलगे। मुदा हमरा तँ माइक डाँट बड़ अधला जकाँ लगै छल। हमरा ऐ बातक भान थोड़े छल जे माए पढ़ाइक महत जनै छथिन तँए डँटै छथिन। जेना-तेना मैट्रिक धरि तँ आबि गेलौं मुदा पढ़ाइमे हम केहेन छेलौं से तँ बुझिए गेल हएब। पिताजी सेहो हमर पढ़ाइ-लिखाइ खातिर चिन्तिते रहै छला।

पिताजी सदिखन चिन्तामे डुमल रहै छला। एक दिन दिलक दौड़ा पड़ि गेलासँ स्वर्गधाम चलि बसला। आब हमरा विद्यालय जेबाक संग घर परहक पढ़ाइ सेहो बन्न भऽ गेल। चूकि घरोक काज-भार हमरेपर पड़िगेल। बोर्ड परीक्षामे सेहो फेल भऽ गेलौं। मैट्रिक परीक्षामे फेल भेने लागल कि सम्पूर्ण जीवन दुखे-दुखमे बितल। संगी-साथीक सेझहा लज्जित सेहो रहए पड़त, ई सोचैत मन पड़ल माइक डाँट-फटकार। जखनिओ हमरा पढ़ाइ खातिर डँटै छेली तखनि हमर अन्तर आत्मासँ अवाज आएल-

"अखनि बेर नै भेल अछि, समए बँचल अछि शेष।"

आब हमरा पढ़ाइक जुनुन सवार भऽ गेल। हम पुनःमैट्रिकक फार्म दुबारा भरैत पढ़ाइ शुरू केलौं। मैट्रिक परीक्षामे प्रथम स्थान केलौं। प्रथम स्थान पाबि आगूक पढ़ाइ जारी रखलौं। माइक कृपा भेल, संगे आसिरवाद भेटए लगल। आजूक दिन सरकारी सेवामे पदाधिकारीक पदपर रहि सेवा दऽ रहल छी। माइक डाँट, असिरवादमे बदलि गेल। हमर कामयावीक सभटा श्रेय माइक छी। संगे हमरा ई अनुभव भेल जे माता-पिताक डाँट-फटकार बेजा नै होइत अछि। किएक तँ माइक डाँटमे बच्चाक भलाइक कामना नुकाएल रहैत अछि।





आत्म निर्भरता लेल कोनो उमेर नै

पछिला महिना हम अपन मित्रसँ मिलबाक खाितर राजस्थान गेल छेलौं। मित्रक घरक बगलमे एकटा साइठ बर्खक महिला छल। जिनकर माथ अँचरसँ झाँपल छल आ पल्थी मारि जमीनपर बैसल छेली। सहायता समूह जीविका प्रशिक्षण प्राप्त करि कऽ पापड़ बनबैत जीवनक आत्म निर्भर भऽ अपन सहायता समूहक माध्यमसँ गाममे एकटा परियोजना चला रहल छेली। परियोजनाक माध्यमसँ गामक बहुतो महिला सभ आत्म निर्भर प्रतिभावी प्राप्त केने कम्प्यूटर, सौर ऊर्जाक क्षेत्रमे समपन्न खुशहाली पकड़ि कऽ रखने छेली। संगे गामक बालक-बालिका सेहो सभ कुड़ा-कड़कट अथबा लकड़ीसँ खेलौना बनेनाइ सीख कऽ काबिलेतारिफ छल। हुनका सबहक प्रतिभा आ जीबठ देखैत बनै छल।

देखैमे आएल जे ढलैत उमेरक औरत सभ जे कम्प्यूटरपर बैस अपन-अपन कारोबारक लेखा-जोखा तैयार करबामे सेहो काबिलेतारिफ छल। हमरा झाँकैत देखि ओ औरत मुस्कुराइत कहली-

"अन्दर आबि जाउ ने।"

हम अन्दर चलि गेलौं। पुछलियनि-

"अहाँ की कऽ रहल छी?"

बजली-

"कम्प्यूटरपर नोटिश बना रहल छी। हमर काज अछि गाममे जा लोक सभसँ मिलि कऽ हुनकर सबहक तकलिफ आ सुझाव इकट्ठा करि कऽ कम्प्यूटरपर टाइप कऽ जीविका अधिकारीकेँ पठा देनाइ।"

हम आगू पुछलियनि-

"ई काज अपने केतेक दिनसँ करै छी?"

ओ बजली-

"किछुए सालसँ कऽ रहल छी। हम अनपढ़ छेलौं। ई काज करैले पढ़नाइलिखनाइ सीखलौं। आब हम ई-मेल करब।"

ई कहैत हमरा धियानकेँ अपना तरफ खिंचैत टाइप करबामे लगि गेली। टाइप बिलकुल देवनागरी लिपिमे सुसज्जित छल, सजौल छल। ई साइठ बर्खक महिलाक तजुरबा देखि हम चकित भऽ गेलौं। आब हमर उत्सुकता आगू बढ़ल लगल। बढ़ैत उत्सुकताक क्रममे फेर पुछलियनि-

"आर की सभ करै छी?"

ओ बजली-

"दू सए पचास लड़कीकेँ कम्प्यूटरक ज्ञान जेतेक हमरा अछि ओ सीखा चुकल छी।"

हम ई सुनि आरो चकित भेलौं। नजरि बगलक कोठरीमे गेल। देखलौं एकटा नवयुवती कम्प्यूटरपर अपन आँगूर दौगा रहल अछि। ओइ नवयुवती दिस हमर नजरिकेँ देखैत पुन: बजली-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"ओ नवयुवती जिनका अहाँ देखै छी, अनेक नव-नव लोककेँ आब हमरे जकाँ कम्प्यूटरक जानकारी दैत रोजगार योग्य बना रहल अछि।"

हम एकबेर फेर चकित भऽ गेलौं। लागल जे किछु करबाक हेतु उमेर कोनो बाधा नै होइत सिरिफ जिज्ञासा चाही।

❍❍❍

ISSN 2229-547X VIDEHA

मर्दानी नारी

मर्दानीक मतलब होइत अछि, निडर, साहसी, स्वतंत्रता व आत्मनिर्भरता। नारी जेतेक अछि सबहक अन्दर ई तागत अछि, परन्तु खगता ऐ बातक अछि जे नारी सभ ई बातकेँ समझौ आ समझि कऽ बाहर निकालौ।

ई कथा छी एकटा अब्बल-दुब्बर गरीब नारीक। बर्ख २०१३ तिथि स्वतंत्रता दिवसक दिन हरिपुर डीह टोलक रूपनी देवी, मधुबनीसँ कलुआही जाइवाली पक्की सड़कक कातमे एकटा छोटछीन चाहक दोकान खोलि अपन रोजगारक शुरू केलक। रूपनीकेँ ई दोकान खोलैकप्रयोजन ऐ लेल पड़ल जे एक दिन अन्नक अभावमे बाले-बच्चे भूखले सूतए पड़लै। बिहान भने रूपनीक पति भोला रोजी वास्ते गामक मालिक टुनटुन ठाकुरक हबेलीमे पहुँच मजदुरी करए लगल।

दोकान खोलैसँ पनरह दिन पहिनेक बात छी। रूपनी अपन पतिक कमाएल बोइन लबैले टुनटुन ठाकुर हबेलीपर गेल।भिनसरक आठ बजैत रहै। रूपनीकेँ देखिते ठाकुर साहैब पुछि बैसल-

"केतए एलेँ रूपनी?"

बाजलि-

"मालिक, बोइन लइले।"

एतबे बात सुनैत टुनटुन बाबू भड़कि उठला। रूपनीकेँ फटकारैत बजला-

"अखनि तँ भोलबा खेतमे पहुँचबे कएल आ तूँ बोइन ले चलि एलेँ।"

रूपनी सकदम भऽ ठाढ़े छल। आकि पुन: टुनटुन बजला-

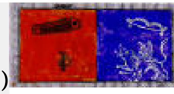
"खुरपी ले, दरबज्जाक सभटा घास उखार तखने बोइन देबौ।"

ई बात सुनिते रूपनीक आगू रातिक तरेगन सोझहामे आबि गेल। माथपर हाथ दऽ सोचए लगल। की करूँ, रातिमे तँ सब परानी भूखले सुति रहलौं। अखनि की खाएत आ खाएब। मालिकक बात तँ निठुर होइते अछि। कमाएलो बोइनपर लुलकार सुनैए पड़ै छै। आब के करब! पेटमे अन्न नै, गामपर बच्चा बाटे तकैत हएत जे मालिक ऐठामसँ किछु आनत माए तँ खाएब। मुदा ई कोन भगवानक चक्र छी। नै आब छूछ हाथे घर नै जाएब। सोचैत रूपनी चटे हबेलीसँ धुरियाएले पएरे घूमि बजार पहुँचल। बजारक एकटा किराना दोकानपर आबि दोकनदारकेँ कहलक-

"मालिक, ई हमर नाकक छौंक रखि लिअ आ चाउर-आँटा दिअ।"

दोकनदार बाजल-

"भोला हमर दू दिन काज केने छल, जे बोइनो पछुआएल छै। अहाँ जे समान लेब से बाजू दऽ दइ छी।"



ISSN 2229-547X VIDEHA

रूपनी सोचैत बाजलि-

"एक दिनक बोइनक चाउर-आँटा दऽ दिअ आ एक दिनककेँ चाहपती-चीनी आ ैर बिस्कुट आ ैरो पलाष्टिकक पचासटा गिलास दऽ दिअ।"

दोकानदार बाजल-

"पाहुन अबै छथि की?"

रूपनी-

"नै, चाहक दोकान खोलब।"

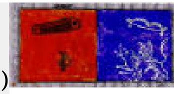
दोकानदार चाहक दोकान खोलै जोकर सभ समान दैत समझबैत-बुझबैत दोकान चलबैक सभ तरीका बुझा रूपनीकेँ विदा केलक।

रूपनी घर अबिते पहिने खेनाइ बना बाल-बच्चाकेँ खिआ पति लेल खेनाइ लऽ ठाकुर साहैबक खेत जा भोलोकेँ खिएलक। पछाति ओतएसँ घर आपस विदा भेल। बाटमे अबैत रूपनीकेँ ठाकुर साहैबक मलिकाना बात झुड़झुड़ाइत माथकेँ घुड़ियबैत, पछाति बरहम स्थानमे बैसि दोकानक जगह टोह्यिा लेलक। टोह्यिबिते ओतए घर आबि पहिने खेनाइ खेलक।

दोसरे दिन रूपनी स्वतंत्रता दिवसक अवसरिपर चाहक दोकान खोलि अपन मधुर भाषाक सहयोगसँ चाह-बिस्कुट बेचए लगली। अपन हूनर संग साहसकेँ बटोरि पतिकेँ मजदूरी करैसँ मना करैत दोकानेपर काज करैक बोध देबए लगली। भोला सेहो मालिक ठाकुरक झझकारकेँ मोन पड़ैत दोकानक काजमे जतनसँ लागिगेल।

रूपनी साले भरिमे काफी उन्नति करैत दोकानक रंग-ढंग बदलि देलक और अपन पति भोलाकेँ मालिक कहि सम्बोधित करैत चाहक दोकानसँ मिठाइ, जलपान आ भोजनक दोकान बनारूपनी अपन साहस आ मर्दानीक संग आत्म निर्भरताक परिचए दैत स्वतंत्रताक जिनगी जीवि रहल अछि।

OOO



ISSN 2229-547X VIDEHA

चतुर बालक

ई कथा सोनू नामक एकटा दस बर्खक बालकक छी। सोनू गरीब परिवारमे जनम भेने गामक-घरक लड़का सभसँ कतराइते रहै छल जे, हमर माए-बाबू गरीबीक जिनगी जीब रहल अछि।

एक दिन सोनू अपना गामसँ बजार चलि देलक। बाटमे सोचैत रहल जे गरीबसँ धनीक केना हएब। ई सोचैत सोनू एकटा होटलक सोझहा सड़कपर ठाढ़ भऽ गेल। सोचैत-सोचैत सोनू होटल दिस डेग बढ़ेलक। तखने होटलक मालिक मनेजरकेँ कहलक-

"हम ऊपरका रूपमे सुतैले जाइ छी, बेसी खगता हुअए तखने हमरा उठाएब।"

सोनू ऐ बखतकेँ मोनासीब बूझि दस मिनट रूकि कऽ मनेजरकेँ कहलक-

"होटलक मालिक- बौधू बाबू हमर पिताक दोस्त छथिन। हुनकासँ भेँट करबाक अछि।"

मनेजर एकटा बेड़ा द्वारा सोनूक समाद मालिक लग पठेलक। मालिक अधकचुआ नीनमे रहैक कारणे बेड़ाक बातकेँ ठीकसँ नै बूझि कहलनि-

"जाउ, जे मगैत होइ से दऽ देबै।"

निच्चाँ आबि बेड़ा मालिकक कहब मनेजरकेँ सुना देलक। आ अपन काजमे लगि गेल।

मनेजर सोनूकेँ पुछलक-

"बौआ, की लेबह?"

सोनू उत्तर दैत कहलक-

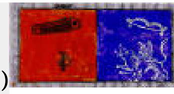
"खेनाइ खिआ दीअ आ जे बढ़ियाँ मिठाइ हुअए से दूटा डिब्बामे दऽ दीअ।"

मनेजर सोनूकेँ खेनाइ खिआ दू डिब्बा बढ़ियाँ मिठाइ सजा कऽ दऽ देलक। सोनू होटलसँ दुनू डिब्बा मिठाइ लऽ विदा भऽ गेल।

हाथमे दुनू डिब्बा लेने चतुराइ करबाक तजूरबा करबाक लेल दोसर शहर चलि गेल। ओतए सोना-चानीक दोकानमे पहुँचल। दोकानक मालिक लोभी छल। ई बात सोनूकेँ मालूम भऽ गेल छेलै। सोनू ओइ लोभी मालिककेँ चिन्ह, प्रेम-भाव देखबैत मिठाइक सुन्दर साजौल दुनू डिब्बा दैत बाबूजी शब्दसँ सम्बोधित करैत हाथमे थम्हा दैत अछि।

लोभी मालिक मिठाइक डिब्बा अपन पत्नी निरूकेँ बजा दऽ दैत अछि। किछुए कालक बाद, जखनि दोकानमे गहिंकी सबहक भीड़ लगल, तखने बाजल-

"बाबूजी, डिब्बा महक मिठाइ रखि लिअ आ डिब्बा हमरा दऽ दिअ।"



ISSN 2229-547X VIDEHA

मालिक बिनु सोचने सोनूकेँ कहलक-

"जा भीतर, चाचीसँ डिब्बा मांगि लिहऽ।"

सोनू भीतर गेल आ मलिकिनकेँ कहलक-

"चाची, बाबूजी दूटा सोनाक सिक्का दइले कहलनि।"

सुनिते मलिकिनी विचारए लगली। देबाक मन नै देखि सोनू जोरसँ बाजल-

"बाबूजी, जाबए अपनेसँ नै कहबै ताबए चाची थोड़े देती, अपनेसँ कहियौ ने।"

मालिक दोकानपर भीड़क कारणे गद्दीएपर सँ पत्नीकेँ कहलखिन-

"दऽ दिऔ ने।"

पतिक आदेश पाबि मलिकिनी सोनाक दूटा सिक्का सोनूकेँ दऽ देली। लऽ कऽ सोनू ओतएसँ ससरि गेल। आब सोनू ओतएसँ तेसर बजार गेल आ ओतए ओ दुनू सोनाक सिक्का बेचि धन इकट्ठा करए लगल।

ऐ बातक जानकारी गामक मलिक नवीन बाबूकेँ सेहो भेलनि। नवीन बाबू दरबारक सिपाहीकेँ कहि सोनूकेँ बजा पूछ-ताछ केलनि। सभटा बात साँचे-साँच बतबैत कहलक-

"अपन गरीबीसँ छुटकारा पबैले हम एना कऽ रहल छी।"

ई बात कहैत सोनू मलिककेँ प्रणाम कऽ सोझहेमे ठाढ़ भेल रहल। किछुए कालक बाद सोनू फेर बाजल-

"जाबे हमहूँ धनीक नै हएब ताबे कोनो ने कोनो चतुराइ तँ करिते टा रहब ने।"

मालिक नवीन बाबू सोनूक चतुराइ संग धनीक हेबाक दृढ़ सोचकेँ देखैत गुम्म भऽ गेला। डण्डित करब सेहो मनमे एलनि मुदा ओ सोचलनि जे से नइ तँ एकरा निअमित काजमे लगा दिऐ जइसँ ऐ तरहक ठकपानासँ दूर भऽ जाएत। यएह सोचि अपना दरबारमे रखि लेलक।

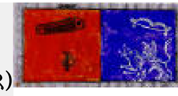
 OOO

फागुलाल साहु जीक आलेख-मानव जीवनमे नारीस्वरूपक गरिमा

मानव जीवनमे नारीस्वरूपक गरिमा

:: फागु लाल साहु

ई हमर माइयक सान्निध्यक बात छी। हे माइ अहाँक सान्निध्य पाबि हम जानि सकलौं जे नारी ब्रह्मविद्या छी। श्रधा छी। कला, ममता, शान्ति, दया संगे पवित्रता सेहो छी। अहाँ सभटा छी जे संसारमे सर्वश्रेष्ठक दृष्टिगोचर होइत अछि। एतबे नै नारी कामधेनु अनुर्पूणा सिद्धी-रिद्धी सेहो छी। नारी मानव प्राणीक समस्त अभाव कष्ट आ



ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १७९ म अंक ०१ जून २०१५ (वर्ष ८ मास ९० अंक १७९) मानुषीमिह संस्कृताम्
ISSN 2229-547X VIDEHA

संकटसँ बाहर रखैक समयानुसार अपनस्वरूप बदलि-बदलि कऽ निष्ठापूर्वक सामर्थ्यवाण होइत अछि। जौं हुनक श्रद्धा-शक्ति आ क्षमताकेँ चिन्हल जाए, मानल जाए तँ समस्त विश्व भरिक कण-कणमे स्वर्गीय स्वरूप बहाल कऽ सकैत छथि।

माए अहाँक सिनेह पाबि कऽ हमरा ई बोध भेल जे नारी सनातन शक्ति छी। आदिकालसँ समाजिक दायित्वकेँ अपन कान्हपर उठौने आबि रहली अछि। जौं ई भार पुरुखक कन्हापर दऽ देल रहैत तँ कह्यिा ने डगमगा गेल रहैत। किन्तु विशाल भवनक नीब जकाँ ओतबे कर्तव्यनिष्ठ मनोयोग, संतोष,संगमकेँ प्रसन्नतापूर्वक अखनो घर चलबैत चलि आबि रहली अछि। ई तँ मानवीय मूलक साकारप्रतिमा छी।

हे जगत जननी अहाँक कृपासँ हमनिम्न ऋृषि वाणीकेँ अन्त:करणमे बसौने रहै छी। कहल गेल अछि-

विद्या समस्तातव देवी भेदा:।
स्त्रिया: समस्ता सकला जगत्सु।।
त्वयैकया पूरितमम्बएतत् काते।
स्तुति: स्तब्यपरा परोक्ति:।।

हे देवी समस्त संसारक सभ विद्या अहींसँ निकलल अछि। सभ स्त्री अहींक स्वरूप छी। समस्त विश्व एक अहींसँ पुरित अछि। अहाँक स्तुती कोन रूपे कएल जाए, अन्त:करणमे ऐ भावक घनीभूत अनुभूतिसँ प्रेरित भऽ हम सभ अहाँक सन्तान...।

नास्ति मातृसमा छाया
नास्ति मातृसमा गति:।
नास्ति मातृसमा त्राणं:
नास्ति मातृसमा प्रिया।

माएक समान कोनो छाया नै अछि। माएक समान कोनो सहारा नै अछि। माएक सदृश कोनो रक्षक नै अछि। माएक सदृश कोनो प्रिय वस्तु नै अछि।

सृष्टिक रचना आ ओकर पालन सेहो अहाँक कार्य रहल अछि। सन्तानो निर्माणमे माएक जे भूमिका रहैत रहल से पितासँ हजारो गुणा अधिक होइत देखल जाइत अछि।

देवी अशिज पुत्र कादिवानकेँ अपना संरक्षण सान्धियमे रखि कऽ शिक्षा देलखिन। हुनका विद्वान बनेबाक अतिरिक्तो योग्य विद्यामे प्रकाण्ड विद्वता सेहो हाँसिल भेल। मर्मज्ञ ऋृषि पंचशिख विषयपर अनेको गंथ लिखलनि तइमे स्वयं स्वीकार केने छथि जे ई ज्ञान माइ सुलभासँ भेटल अछि।

वनवासी शकुन्तला अपन पुत्र भरत जिनका नाओंपर ऐ देशक नाओं भारतवर्ष पड़ल अछि। हुनक पालन-पोषण संगे प्रक्रमी बनेबाक श्रेय माएक अखिल अछि। भरत माइक सिनेह पाबि बचपनेसँ शेरक बच्चाक संग खेलैमे मस्त रहल।

निष्ठा आ लगनक प्रतिक ध्रुवक पालन-पोषण हुनक माइ सुनीति तपश्वनी वनमे रहि कऽ केने छेली। अपन शिक्षण द्वारा संस्कारित कऽ बचपनेमे जीवनक रहस्यक बोध करा देलखिहिन। तइसँ ध्रुव प्रमात्माक अनुभूतिकेँ साक्षात् दिग्दर्शन प्राप्त कऽ लेला।

सत्यनिष्ठ सीता वनवासिनी अपन जीवनोपरान्त सातित्वक व्रर्त धारण करैत पतिव्रताक निर्वाहण करैत अभावग्रस्त स्थितिमे रहितो लव-कुशक पालनपोषण वालमिकी आश्रम रहि केलनि आ लव-कुशकेँ एहेन योग्य सामर्थ पुरुषार्थ बनौलनि जे अजय हनुमान, तथा लक्ष्मण जैसन वीर महापुरुषकेँ लव-कुशक सोझहामे पराजित हुअ पड़लनि।

ज्ञान विज्ञान आ आध्यात्मिक प्रतिभावक क्षेत्रमे देखल गेल कि ढेर रास उदाहरणक पात्र सोझामे आबि जाइए। जेना महर्षि पुलोत्माक पुत्री शची, महर्षि वशिष्ठक आश्रममे रहि कऽ ज्ञान-विज्ञानक प्रवीणता हाँसिल केने छेली। शचीकेँ साधनाक प्रतिभासँ प्रभावित भऽ कऽ देवराज इन्द्र हुनका मंगबैले पुलोत्माक दुआरपर स्वयं पहुँचला। तथा शची इन्द्रानी भऽ इन्द्रपुरीक मर्यादाकेँ बढ़ौलखिन।

मनु एकबेर बजपेय यज्ञ केला। तँ कोनो योग्य पुरोहित नै मिल सकलनि। तखनि मनु अपन पुत्री इलाकेँ योग्य समझि यज्ञाचार्य नियुक्त केलनि आ अनुष्ठान सम्पन्न करौल गेल। इला अपन पिताक मर्यादाकेँ आगू बढ़ौलनि।

आदि शंकराचार्य आ मण्डन मिश्रक शास्त्रार्थमे धर्मपत्नी भारती अपन विद्वतासँ प्रभावित करि कऽ सरस्वतीक उपमा प्राप्त कऽ चुकल छथि। तथा पति मण्डन मिश्रक विजयी हेबाक गौरव प्राप्त करा चुकल छथि।

भारतक प्रसिद्ध जोतिष विद्वन भास्कराचार्य दुआरा रचित सिद्धान्त सिरोमणि पुस्तकेँ उत्तार्ध हुनक लड़की लिला दुआरा लिखल गेल छल। लिला अपन पिताक मर्यादाकेँ बढ़बैमे सद्खिन तत्पर रहैत छेली।

महराजा जनकक दरबारमे महाविदुषी गांग्रीकेँ आ महर्षि याज्ञवल्यकायक शास्त्रार्थ प्रसिद्ध अछि। ओही शास्तार्थमे याज्ञवक्कयकेँ गार्गीक पण्डित आ वैदुष्यकेँ लोहा मानए पड़ल अछि। एहेन बहुतो समतुल्य नारी छथि जेना उदलिंका, विध्यगाथा, अनुसुइया, गौतमीयमी, विदुला आदि अनेक विदुषीगण प्रख्यात अछि।

ज्ञान, विज्ञानक क्षेत्रमे विश्वक अतिरिक्त शौर्य, साहस एवं पराक्रमीमे भारतीय नारीकेँ बढ़ल-चढ़ल देखल गेल अछि। अत: अवला कहबामे हास्यपद बुझना जा रहल अछि। उदाहरण स्वरूप तँ अनेको अछि जेना शिवक धनुषक शर्त राजा जनककेँ सीता स्वयंवरमे राखए पड़ि गेल जे ऐ धनुषक तोड़िनिहारेसँ सीताक बिआह करब। ई तँ सीताक पराक्रमक झलक छल।

दशरथक युद्धमे केकयी सार्थिक भार निर्वाह करैत अपना पतिकेँ संकटसँ प्राण बँचौने छेली।

कृष्णार्जुन युद्धमे अर्जुनक संग रथ संचालन द्रोपदी बड़ी कुशलताक संग निर्वाह केने छेलखिन।

अर्थशास्त्रमे सेहो धनुषधारी महिलाक उल्लेख आबि रहल अछि। संगे ईहो वर्णन आबि रहल अछि जे बेटी-बेटीकेँ समान शिक्षा देल जाइत छल। ई जागरूकता आब समाजमे आबि रहल अछि।

धर्म और समाज संस्कृतिक सेवामे नारी जाति बढ़ि-चढ़ि कऽ बलिदान प्रस्तुतक उदाहरण अछि।

आचार्य वृहस्पतिक पुत्री देवीहूति और भावभव्यक कन्या रोमशा अपन पिता तथा पतिसँ आज्ञा प्राप्त कऽ विभिन्न क्षेत्रमे धर्म प्रचार केने छेली। तथा समाज कल्याणक कार्यमे दक्षता प्राप्त केने छेली।

अभ्रण ऋृषिक कन्या एकटा गुरुकुल खोलि छात्र-छात्राक समान रूपे प्रवेशक अधिकार दऽ शिक्षा दान करबाक बेवस्था केने छेली। आइक जुगमे नारीरूपमे मदर टेरेसा भारतीय नारीकेँगौरवान्वि सेहो केली अछि।

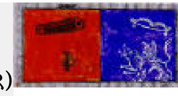
नेतृत्वक क्षेत्रमे सेहो महिलाक भूमिका अग्रसर रहल अछि। इन्द्रकेँ दिशा निर्देश इन्द्रानीसँ प्राप्त होइत रहल छल।

धृतराष्ट तँ राज्य संचालनमे अस्मर्थ छला। अही कार्मकेँ हुनक पत्नी गंधारी कऽ रहल छेली। ऐतिहासिक तथ्यकेँ देखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे आइ धरि राजश्री रानी पद्मावती, लक्ष्मी वाइ, अहेल्या, सरोजनी नाइडू तथा कस्तुरवा गाँधी जकाँ अनगिनित उदाहरण अछि।

बात प्रतिभा प्रमाणित करबाक तथा स्वयं विकसित हेबाक तक सीमित नै अछि। प्रतिभासँ कहीं अधिक हुनक तियागक अछि जे असीमित अछि। जेतए स्वयं पर्दामे रहि कऽ अपन पतिक समाज निर्माण आ आत्म निर्णाणमे सहायता प्रदान करैत रहल अछि।

एतेबे नै, धर्मपत्नीक रूपमे योगदान प्रस्तुत करबामे सेहो मर्यादाक निर्वाह करैत रहल अछि। जेना महान विदुषी विधोतमाक बिआह अशिक्षित काली दाससँ भेल। विधोतमा एतेक विद्वान छेली जे बिआहक लेल शास्त्रार्थमे शर्त राखल गेल। अनेको विद्वान ओइठामसँ हारि मानैत आपस भऽ गेल। अन्तमे, क्षलसँ मूढ़ काली दासक संग हुनक बिआह करौल गेल। विधोतमाकेँ जब ऐ बातक पता चललनितँ पति काली दासकेँ उत्तेजित करि कऽ ज्ञानक प्रति लगन पैदा केलनि आ हुनका अध्ययनक रूचि जगेलनि। फलस्वरूप मूढ़ मति काली दास अखनि महा कवि कालीदासक रूपमे विख्यात छथि।

ऐ तरहेँ तुलसी दासक पत्नी रत्नावली अपन सुख-सुविधाकेँ तिलांजलि दैत अपन पतिकेँ कामुक्तासँ इश्वरभक्तिक ओर मोड़ैत रामभक्त महा लेखक बनौलखिन। ई सत् साहस रत्नावलीकेँ छल जे छुद्र मानवसँ तुलसी



ISSN 2229-547X VIDEHA

दास जकाँ संत आ रामचरित मानस महाग्रंथक रचियेता बनौलनि। स्वयं रत्नावली उच्च कोटिक साहित्यकार सेहो छेली।

मैत्रेयी महर्षि जाज्ञवल्क्यक पत्नी छेली। ओ कोनो संसारिक सुखक वास्ते बिआह नै केने छेली। आप्तिु विशुद्ध आत्माक साधाना लेल हुनक सहधर्मीनी बनली। संसारिक सुखक इच्छाक विषयमे पुछलापर ओ साफ इन्कार कऽ गेली।

ऐ तरहें राजकुमारी सुकन्या आन्हर वृद्ध चमन महर्षि केवल ऐ खातिर बिआह केलखिन जे हुनक तपस्या आ शोधकार्य हेतु आवश्यक साधन जुटबैमे सहायताप्रदान कऽ सकनि।

राजा अश्वपतिक पुत्री विदुषी, अतिरूपनी राजकुमारी सावित्री एक वनबासी आ निर्धन सत्यवानसँ मात्र ऐ उदेशसँ बिआह केलनि जे हुनक बनौषधि शोधमे सहायक भऽ कऽ मानव मंगल हेतु महतपूर्ण योगदान करि सकनि।

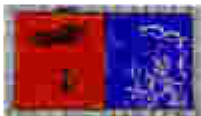
ऐ तरहें असंख्य प्रमाण अछि जइसँ सिद्ध होइए जे प्राचिने कालसँ आदर्शवादी नारीमे अपन प्रतिभा, क्षमता आ योग्यताक लाभ समाजकेँ देबामे अपन योगदान दैत मानव विकासमे मुख्य भूमिका निभाबैत रहल अछि। जरूरतो तँ बुझाइते अछि।

नारी नर केर शक्ती अछि
सृष्टि केर अभिव्यक्ति
नारी बिना शिव सदृश
कण-कणक शक्ति केर भक्ति।

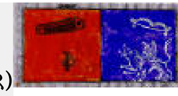
हमर समाजिक जीवन दाम्पति जीवनसँ आरम्भ होइत अछि। पति-पतिक बीच जेतेक प्रेम, सौजन्य, आत्म भाव, आत्म समर्पण आकि बफादारीक भाव रहत ओतबे मानवीय वा गृहस्ती जीवनमे आन्दक प्राप्ति हएत। ओतबे अनुपातमे श्री समृद्ध एवं सुख-शान्ति भेटत। माएक स्वरूप धानण करैत गंगा सदृश भऽ जाइत अछि।❍❍❍

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन







सिद्धिरस्तु